सारांश (Abstract)

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी दलित साहित्य के पुरोधा हैं। हिंदी में दलित साहित्य को विकसित करने में ओमप्रकाश वाल्मीकि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी साहित्य में उस समय दस्तक देते हैं, जब एक तरफ भारत ने विश्व बाज़ार के स्वागत के लिए अपने दरवाज़े खोलने शुरू कर दिए थे, तो दूसरी तरफ सांप्रदायिक दंगे बाबरी मस्जिद विध्वंश जैसी घटनाएँ घटीं। तीसरी तरफ पूरे देश में 'मंडल कमीशन' पर विवाद चल रहा था। ऐसे समय में ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी साहित्य में गौतम बुद्ध, डॉ. अम्बेडकर, फूले की विचारधारा को लेकर आते हैं। उन्होंने गौतम बुद्ध के जीवन-दर्शन, डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा और फूले के संघर्षशील-जीवन से प्रेरणा और आधार ग्रहण कर हिंदी साहित्य में एक नई अस्मितावादी धारा की नींव रखी, जिसे साहित्य में दलित साहित्य कहा गया।

'ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना' विषय पर शोध-कार्य करने से पहले ओमप्रकाश वाल्मीकि विरचित संपूर्ण साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक था। ऐसे में मेरी प्राथमिकता उनके साहित्य के अध्ययन की रही। इस दौरान मैंने उनके संपूर्ण साहित्य यथा कविता, कहानी, आत्मकथा, आलोचना आदि का अध्ययन किया। अध्ययन के उपरांत उसमें निहित दलित चेतना के विभिन्न कोणों को मैंने रेखांकित किया, जो उक्त शोध-कार्य का मुख्य उद्देश्य है। इसके साथ ही कई सहायक ग्रंथों की सहायता से मैंने अपनी विश्लेषणात्मक क्षमता और आलोचना दृष्टि का विकास करते हुए अपना शोध-प्रबंध तैयार किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की आवश्यकता मैं इसलिए भी मानता हूं कि जब भी कहीं किसी गोष्ठी या सम्मेलन में ओमप्रकाश वाल्मीकि पर चर्चा होती है तो ज्यादातर बातें 'जूठन' से शुरू होती है और 'जूठन' पर ही ख़त्म भी हो जाती हैं। यह सच है कि 'जूठन' ने ओमप्रकाश वाल्मीकि को एक अखिल भारतीय पहचान दी लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि उनकी अन्य रचनाएँ विचाराधीन नहीं हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को कुल छः अध्यायों में विभक्त किया गया है, जो इस प्रकार हैं - प्रथम अध्याय- ओमप्रकाश वाल्मीकि: व्यक्तित्व और कृतित्व। द्वितीय अध्याय - दलित आंदोलन और ओमप्रकाश वाल्मीकि। तृतीय अध्याय- ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता में दलित चेतना। चतुर्थ अध्याय- ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी में दलित चेतना। पंचम अध्याय- ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा और दलित चेतना और षष्ठम अध्याय- दलित साहित्य और आलोचना के प्रतिमान।

प्रथम अध्याय 'ओमप्रकाश वाल्मीकि: व्यक्तित्व और कृतित्व' में मैंने ओमप्रकाश वाल्मीकि को साधारण से असाधारण की ओर बढ़ते हुए व्यक्तित्व और एक साहित्यकार के रूप में दिखाने का प्रयास किया है। इसके अंतर्गत मैंने सबसे पहले 'व्यक्तित्व' शब्द को परिभाषित करते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि के जन्म, बचपन, शिक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, पेशा, उनकी रुचि, उनके चिंतन के विविध स्रोत आदि पहलुओं के

आधार पर उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला है। साथ ही उनके द्वारा संपादित पत्र-पत्रिकाओं का नाम और उन्हें प्राप्त पुरस्कार, सम्मान आदि का भी उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'दलित आंदोलन और ओमप्रकाश वाल्मीकि' पर अध्ययन करते हुए मैंने सबसे पहले 'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ और उसकी परिभाषा को दिखाया है। जब यही शब्द साहित्य के साथ जुड़ता है तो साहित्य में एक अलग ही किस्म की धारा का निर्माण होता है, जिसे साहित्य जगत में 'दलित साहित्य' के नाम से जाना जाता है। तो इस क्रम में मैंने विभिन्न साहित्यकारों, विद्वानों, चिंतकों, समाजशास्त्रियों, इतिहासकारों एवं दार्शनिकों के मतों और विचारों के सहारे 'दलित साहित्य' को परिभाषित करते हुए उसके प्रेरणा स्त्रोत पर अपनी बात रखी है। इसके साथ ही डॉ. अंबेडकर के विचारों को आधार मानकर दलित आन्दोलन को तीन चरणों में बांटा है - 1. डॉ. अंबेडकर पूर्व दलित आन्दोलन 2. डॉ. अंबेडकर और दलित आन्दोलन और 3. डॉ. अंबेडकरोत्तर दलित आन्दोलन। दलित आन्दोलन की वर्तमान स्थिति, इसकी दशा-दिशा और इसके साहित्यिक परिप्रेक्ष्य पर विश्लेषण सविस्तार किया गया है। साथ ही हिंदी दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि की भूमिका और उनके योगदान को दिखाने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय 'ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता में दलित चेतना' में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के काव्य-संसार को लिया गया है। इसमें हिंदी दलित कविता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को दिखाते हुए कबीर, रैदास, हीराडोम, अछूतानंद, बिहारी लाल हरित आदि के काव्य-परम्परा को दिखाते हुए सत्तर-अस्सी के दशक के कवियों डॉ. सुखबीर सिंह, डॉ. प्रेमशंकर, डॉ. एन. सिंह, डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन', कंवल भारती और साथ ही दलित कवयित्रियाँ सुशीला टाकभौरे, कावेरी, रजनी तिलक, रमणिका गुप्ता आदि की कविताएँ और उसमें निहित दलित चेतना के स्वर को भी पहचानने का प्रयास है। इसके बाद ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य-संसार का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए उसमें निहित विभिन्न समस्याएँ और उन समस्याओं में निहित दलित चेतना के स्वर की पहचान है।

चतुर्थ अध्याय 'ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी में दलित चेतना' में उनकी कहानियों में मौजूद दलित चेतना के विभिन्न बिंदुओं को रेखांकित किया है। इसके लिए उनके तीनों कहानी-संग्रहों में चित्रित सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ ही स्त्री जीवन की समस्याओं को भी दिखाया है।

पंचम अध्याय 'ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा और दलित चेतना' के अंतर्गत ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' (प्रथम और द्वितीय भाग) का विस्तार से अध्ययन कर विश्लेषण किया है। इसमें हिंदी दलित आत्मकथाओं का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। 'जूठन' केवल दलित आत्मकथाओं में ही नहीं बल्कि संपूर्ण हिंदी आत्मकथाओं में 'मील का पत्थर' साबित हुआ है, क्योंकि यह हिंदी में आज तक लिखित किसी दलित साहित्यकार की सर्वाधिक सशक्त और कलात्मक कृति है। इसमें आत्मकथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने दलित जीवन के दर्दनाक प्रसंगों को पूरे यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। इस

अध्याय में 'जूठन' आत्मकथा में निहित विभिन्न समस्याओं का अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही जूठन की भाषागत विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

षष्ठम अध्याय 'दलित साहित्य और आलोचना के प्रतिमान' अध्याय के अंतर्गत उनके द्वारा लिखित 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र', 'मुख्यधारा और दलित साहित्य' और 'दलित साहित्य: अनुभव, संघर्ष और यथार्थ' आदि पुस्तकों को ध्यान में रखकर उनकी आलोचना या समीक्षा दृष्टि का विवेचन किया गया है। दलित आलोचना वास्तव में दलितों के अनुभव, संघर्ष और यथार्थ का एक पुलिंदा है। प्रस्तुत अध्याय में दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, मुख्यधारा और दलित साहित्य के बीच खींची गई विभाजन रेखा आदि को चिन्हित किया गया है।

समस्त अध्यायों पर कार्य करने के उपरांत उपसंहार के रूप में शोध कार्य से प्राप्त होने वाले निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है जिसमें ओमप्रकाश वाल्मीकि के सम्पूर्ण साहित्य में दलित चेतना के विविध संदर्भों को प्रस्तुत किया गया है।